आंखों से देखने के लिए पपोटे ऊपर खींचकर रूमाल से बांधना पड़े और घोड़े पर बैठने के लिए कमर को कस कर बांधना भी पड़ा और इन्हीं बहत्तर में नाबालिग़ (अव्यस्क) बच्चे भी थे, जिन में एक छः महीने का दूध पीता बालक भी था। इन शहीदों की जीवनियां पढ़कर बरबस यह कहना ही पड़ता है कि कर्बला के मैदान में मनुष्यता और बर्बता का खुला हुआ मुक़ाबला था, जिस में शहीद होने वालों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर मैदान जीत लिया।

इन समस्त घटनाओं व समयों के सम्मुख यह कहना ही पड़ता है कि इमाम हुसैन ने मनुष्यता को उच्च स्थान दिया और सज्जनता का सिर गर्व से ऊंचा हो गया। इस लिए हर व्यक्ति के वास्ते जिस के हृदय में मनुष्यता की श्रेष्ठता और व्यक्तित्व का दर्द है, यह आवश्यक है कि वह इमाम हुसैन की याद बनाए रखे और कर्बला की घटना से अपने दैनिक जीवन में पाठ लेता रहे। इमाम हुसैन के व्यक्तित्व से लेश मात्र भी प्रभावित हो जाने से हम में बहुत सी विशेषताऐं उत्पन्न हो सकती हैं और उन की याद हमको धार्मिक कट्टरता के स्तर से ऊंचा करके मनुष्यों की बीच में भाई–चारे का सम्बन्ध स्थापित करती है। मोहर्रम की मजलिसों को अगर धार्मिक रीति–रिवाज मान भी लें, तो शायद यही एक ऐसी रीति–रिवाज है, जिसमें प्रत्येक धर्म का व्यक्ति बराबरी के नाते एक तरह से बैठकर बराबर से सम्मिलित हो सकता है। यही वह धार्मिक सभा है, जिस में प्रत्येक धार्मिक विचार का व्यक्ति, केवल मनुष्य होते हुए एक सम्पुर्ण व्यक्ति की याद में, सांसारिक मोह को त्याग कर, आत्मिक विशेषताओं से प्रफुल्लित होते हुए अपने जीवन के हेतु आदर्श प्राप्त करता है। ✦✦✦

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 484 मोहर्रम 1386 हि0 /अप्रैल 1966)

ज़िन्दगी सकीना की

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा

सब्र की अलामत है ज़िन्दगी सकीना की
बन्दगी की रिफ़अत है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क ये अलम में है या अतश की है तारीख़
मक़सदी इशाअत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी–ए–सरवर है उलफ़ते सकीना में
और पदर की उलफ़त है ज़िन्दगी सकीना की
इस तरह बलाओं में लोग मर ही जाते हैं
कोहे अज़्मो हिम्मत है ज़िन्दगी सकीना की
अब हुसैन की सूरत सरपरस्त हैं ज़ैनब
उनको एक दौलत है ज़िन्दगी सकीना की
हक़ के वास्ते जीना हक़ के वास्ते मरना
किस क़दर हक़ीक़त है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क दे के अम्मू को सर झुका के कहती हैं
आपकी बदौलत है ज़िन्दगी सकीना की
जुरअते सकीना से हिम्मतों को निस्बत है
अज़्म से इबारत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी रहे हक़ में बहरे रब बसर की है
कुल की कुल इबादत है ज़िन्दगी सकीना की
मक़सदे सकीना से है नदा को बस निस्बत
शायरी की क़िस्मत है ज़िन्दगी सकीना की

¼'ks u0 24 dk cfd;k------------------½

उसे अवगुणी तथा पापी कहा हैः–

है हमारे अवगुणों की भी न हद।
हाय गरदन भी उधर फिरती नहीं।।
देख करके दूसरों का दुख दर्द।
आंख से दो बूंद भी गिरती नहीं।।

ऐ अल्लाह! तू उन मनुष्यों को सुबुद्धि प्रदान कर जो इन दुश्यों को सुनकर विलाप नहीं करते एंव शोक मनाने वालों को खिल्ली पात्र समझते हैं उन पर हंसते हैं एंव रोने सी स्वाभाविक, प्राकुतिक वस्तु को घृणा दृष्टि से देखते हैं। हमारे लखनऊ के एक नवयुवक उच्च कवि 'माथुर' जी ने इसको भली प्रकार प्रदर्शित किया हैः–

इन्सान तो ग़म का आदी है।
फ़ितरत के लिए ग़म होता है।
मज़लूम अगर मरता है कोई।
हर क़ौम में मातम होता है।।

परन्तु केवल विलाप करना हीं पर्याप्त न होगा अपितु इमाम हुसैन का बलिदान जो ईश–भक्ति दृढ़ निश्चय, अडिग वीरता, धीरता, वचन पालन एंव कर्तव्यपरायण्ता आदि सदगुणों को संदेश एंव शिक्षा दे रहा है, उसका भी पालन करना होगा। तभी हम इस योग्य होंगे कि हुसैन के प्रेमी कहलाऐं।

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन नं0 262)